परीक्षा संगीत संस्कार
गायन – वादन, भाग -1

उद्देश्य :- इस वर्ष हमें विद्यार्थियों पर संगीत के संस्कार एवं उसके प्रति रूचि निर्माण करना हैं, क्योंकि स्वर और ले के आधारस्तंभ है |
"स्वर" संगीतरूपी भाषा के अक्षर है और "लय" संगीतरूपी भाषा का व्याकरण है|

सूचना :- इस वर्ष में लय और ताल का क्रियात्मक संगीत में साधारण प्रयोग विद्यार्थी से अपेक्षित है | इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी | लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्तता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थी का वार्षिक मूल्यमापन श्रेणी के आधार पर होगा | (अ+, अ , ब+, ब)

पाठ्यक्रम :-

1. आसन बैठक – ओंकार का उच्चारण (षडज स्वर में)
2. भाषा सीखने के लिये जिस प्रकार हम पहले स्वर और व्यंजन बोलना सीखते है, उसी प्रकार संगीत में ओंकार का उच्चारण :- सा-प-सां और सा-म-सां |
3. सात स्वरों का शुद्धता पूर्वक गायन तथा लय के साथ स्वरों का अभ्यास करवाना |
4. संगीत में ध्वनियों के साथ स्वरों का अभ्यास किया जायेगा – जैसे स्वरों का आकार, ईकार, उकार, एकार और ओंकार में गाने की क्षमता- सिर्फ एक ही स्वर ध्यान में रखते हुये |
5. दृक, श्राव्य माध्यम से संगीत की शिक्षा, चित्र के माध्यम से संगीत का परिचय, छोटे छोटे लयबद्ध स्वर समूहों का उच्चारण, लयबद्ध बालगीत, पशु-पक्षी के गीत, पर्यावरण गीत, प्रादेशिक गीत आदि |
6. सांगीतिक श्रवण रुचि निर्माण करने हेतु तथा संगीत में आनंद के लिये आवाज की दुनिया में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना | विविध बालगीतों का श्रवण |
7. सांगीतिक खेलों के माध्यम से अभ्यास जैसे अंताक्षरी और उसके विविध प्रकार
8. राष्ट्रगीत-जनगणमन
9. अंको की सहायता से दादरा और कहरवा एवं तीनताल बोलने का अभ्यास
10. भूप राग में आरोह – अवरोह और सरगम गीत

परीक्षा संगीत संस्कार
गायन – वादन, भाग -2

उद्देश्य - विद्यार्थी में संगीत के प्रति रुचि और मानसिकता उत्तरोत्तर बढ़ती जाए एवं सरलता से उन्हें संगीत का आनंददायी परिचय हो।

सूचना :- **इस वर्ष में स्वर और ताल का क्रियात्मक संगीत में साधारण प्रयोग विद्यार्थी से अपेक्षित है। इस वर्ष परीक्षा नहीं होंगी। लेकिन वर्ष के अंत में केवल पाठ्यक्रम पूर्णता के अनुसार स्वयं शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों का वाचिक मूल्यांकन श्रेणी के आधार पर होगा। (अ+, अ, ब+, ब)**

1. उचित आसन बैठक (संगीत के अभ्यास के लिये सभी स्वरों के साथ ओंकार उच्चारण)
2. स्वर, शुद्ध स्वरों का सुरिला उच्चारण, (साँस, गलत जगह न टूटे इस पर ध्यान देना।)
3. लय - यही स्वर छोटे छोटे स्वर समूह के साथ लयबद्ध गाने का अभ्यास
4. ताल - सरल स्वरावली या शुद्ध स्वरों की सरगम (कहरवा और दादरा ताल में)
5. मुखाकृति – गायन/वादन करते समय मुख पर किसी प्रकार की विकृति न आए।
6. गीतों का अभ्यास - संस्कृत श्लोक, बाल गीत, प्राथना गीत, प्रादेशिक गीत, आरती, भजन आदि - भाषा स्पष्ट, उच्चारण शुद्ध हो तथा गीत की लय एवं शब्द के अनुसार भाव प्रदर्शन (Action Song) हो।
7. दृक श्राव्य के माध्यम से संगीत से परिचय (वाद्यों के चित्र दिखाना, वाद्यों का आवाज सुनाना, चित्रों के माध्यम से संगीत परिचय)
8. सरल छोटे छोटे अलंकार सिखाना | उदा. सा सा, रे रे, ग ग
9. स्वरों के नाम बताना (सा- षड्ज, रे – ऋषभ, ग – गंधार आदि)
10. कहानी, रंग एवँ खेलों के माध्यम से संगीत से परिचय
11. राष्ट्रगीत – जन-गण-मन एवं राष्ट्रगान वन्दे मातरम्
12. शुद्ध स्वरों का सरगम गीत, राग भूपाली एवं राग दुर्ग - सरगम गीत एवं सरल बंदिश
13. अंको कि सहायता से ताली देकार दादरा एवं कहरवा बोलने का अभ्यास